इकाई–8: नातेदारी शब्दावली
(Kinship Terminology)

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

8.1 नातेदारी शब्दावली (Kinship Terminology)
8.2 सारांश (Summary)
8.3 शब्दकोश (Keywords)
8.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)
8.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- नातेदारी शब्द स्वजन-सूचक शब्द का विकास की जानकारी।
- नातेदारी शब्द का अर्थ समझना।

प्रस्तावना (Introduction)

मोर्गन के स्वजन-सूचक संज्ञाओं के अध्ययन के मूल में एक असत् ऐतिहासक पूर्व ग्रह निहित है। वे उद्‌विकासीय संस्तरों के निर्माण पर ही सदैव जोर देते रहे थे।

रिवर्स ने स्वजन-सूचक संज्ञाओं के महत्त्व का विवेचन प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि स्वजन-सूचक शब्द उन सामाजिक प्रकार्यों के द्योतक हैं जो इन शब्दों के प्रयोग के पहले भी प्रचलित थे। उदाहरणार्थ, इंडियनों के एक विशेष वर्ग में कुछ विशिष्ट प्रकार के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त शब्द **मामा** इन व्यक्तियों के सामाजिक कार्यों को निर्दिष्ट करता है। रिवर्स ने अपने सिद्धांत की व्याख्या अब विलुप्त किंतु पूर्व प्रचलित कतिपय स्वजन-सूचक शब्दों के आधार पर अनुमानित रूप में करने की कोशिश भी की है। तथापि, यह बात स्वीकार की जा सकती है कि जब तक रिवर्स की व्यख्याओं को मोर्गनवादी अटकलों-अनुमानों मे समाविष्ट नहीं कर लिया जाता तब तक इन्हें स्वजन-सूचक संज्ञाओं की विवेचना का उपयोगी तरीका माना ही जा सकता है। जैसे, उरांव में **टाची** शब्द पिता की

बहन, माँ के भाई की पत्नी, माँ की बहन और सास के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार यह विषमलिंगीय समोदर विवाह और पत्नीभगिनी विवाह के प्रचलन का सूचक है, जो इस जनजाति में बहुतायत में पाए जाते हैं। कुछ अन्य उदाहरण भी दिए ही जा चुके हैं। फिर भी, ऐसी व्याख्या को स्वीकार करने की अपनी सीमाएँ हैं।

8.1 नातेदारी शब्दावली (Kinship Terminology)

मजूमदार एवं **मदान** के शब्दों में, "संगोत्र (सम्बन्ध) सूचक शब्द ऐसी संज्ञाएँ होती हैं जिनका प्रयोग विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों के उल्लेख के लिए किया जाता है। जब हम किन्हीं लोगों के नातेदारी के नियमों तथा व्यवहारों को समझना चाहते हैं तो हमें यह अवश्य ही पूछना होगा कि वे स्वजनों को किस प्रकार वर्गीकृत करते हैं, उनमें भेद किस आधार पर करते हैं तथा उनकों पुकारने के लिए किन शब्दों का प्रयोग करते हैं। नातेदारों को सम्बोधित करने के संज्ञा शब्द उनको विभिन्न श्रेणियों और उप-श्रेणियों में विभाजित करते हैं। कभी-कभी यह विभाजन सामाजिक वास्तविकता के साथ सामंजस्य स्थापित करता है और कभी-कभी नहीं भी।

नातेदारी-सूचक शब्दों का अध्ययन भी अति प्राचीन है। मानवशास्त्र में नातेदारी से सम्बन्धित साहित्य का कम से कम आधा भाग इस बात पर लिख गया है कि हम अपने वंश सम्बन्धियों एवं विवाह सम्बन्धियों को सम्बोधित करने के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग करते हैं। **मोर्गन** पहला विद्वान् था जिसने नातेदारी शब्दावलियों के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योग दिया। उसने न्यूयार्क राज्य की इराक्विस जनजाति का जीवनपर्यन्त अध्ययन किया। अपने अध्ययन में आपने यह पाया कि इराक्विस लोगों में नातेदारों का नामोल्लेख करने का तरीका पश्चिमी समाजों से भिन्न है, जैसे पिता को सम्बोधित करने के लिए जो शब्द काम में लाया जाता है, उसी शब्द से वे पिता के भाई, मामा के भाई, आदि को भी पुकारते हैं। इसी तरह से जो शब्द 'माँ' के लिए प्रयुक्त होता है, वही माँ की बहिन के लिए भी किया जाता है। इस विलक्षण घटना की व्याख्या की खोज के लिए मोर्गन ने संसार के सभी भागों में प्रचलित नातेदारी सूचक शब्दों का अध्ययन किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भौतिक रूप से दूर होने या समय की दृष्टि से आगे-पीछे रहने वाले देशों में भी नातेदारी की समान प्रकार की नाम पद्धति है और कुछ नाम पद्धतियाँ तो सभी देशों एवं समाजों में प्रचलित हैं। मोर्गन ने नातेदारी तत्व को समझने के लिए शब्दावली के अध्ययन को राजमार्ग बताया। अपने शब्दावली को वर्गीकरण की एक पद्धति के रूप में बताया जिसके द्वारा हम यह जान सकते हैं कि विभिन्न तन्त्र किस प्रकार नातेदारों को वर्गीकृत करते हैं। नातेदारी शब्दावली को समझने में हम नातेदारी तन्त्रों के उद्विकास को समझ सकते हैं क्योंकि यह भूतकालीन व्यवस्था को समझने का सूत्र प्रदान करती है। उनका यह वर्गीकरण आज मानवशास्त्र में सर्वरूप से मान्य एवं प्रयुक्त है।

(*i*) **विशिष्ट, वर्णनात्मक या व्यक्तिकात्मक** शब्द "यथार्थ सम्बन्ध सूचक होते हैं और केवल उन्हीं व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होते हैं जिनके संदर्भ में या जिनको सम्बोधित करते हुए बात की जाती है।" उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं 'पिताजी' तब हमारा अर्थ एक विशिष्ट सम्बन्धी से ही है जो समाज में पिता के सम्बन्ध से जाना जाता है। पुत्र, पत्नी, माँ आदि अनेक ऐसे ही विशिष्ट शब्द हैं।

(*ii*) इसके विपरीत "**वर्गात्मक पद्धति** के अन्तर्गत एक शाखीय एवं भिन्न शाखीय कई व्यक्तियों और प्राय: विवाह मूलक सम्बन्धियों के लिए एक ही सम्बन्ध सूचक शब्द का प्रयोग किया जाता है। सम्बन्ध सूचक शब्द इन सभी सम्बन्धियों को एक वर्ग के रूप में समान मानता है।" उदाहरण के लिए असम के सेमानागा 'अजा' शब्द का प्रयोग माँ, पिता के भाई की पत्नी, मौसी, आदि तीनों प्रकार के सम्बन्धियों के लिए करते हैं। 'अपू' शब्द का प्रयोग पिता, पिता के भाई एवं माँ की बहिन के पति (मौसा) के लिए किया जाता है। 'आमी' शब्द बुआ और सास के लिए प्रयुक्त किया जाता है। कूकी लोगों में 'हेप' शब्द का प्रयोग दादा, नाना, मामा, ससुर, ममेरा भाई, साला, भतीजा, आदि विभिन्न आयु वर्गों एवं पीढ़ियों के लोगों के

नोट

लिए किया जाता है। अंगामी नागाओं में 'बूरी' शब्द बड़े भाई, पत्नी की बहिन, ज्येष्ठ एवं उनकी पत्नी, चाची, ताई, आदि सभी के लिए किया जाता है। यहाँ हम यह देखते हैं कि विपरीत लिंगीय सदस्यों के लिए भी एक ही शब्द काम लिया जाता है। अंग्रेजी में 'कजिन' (Cousin) शब्द का प्रयोग चचेरे, ममेरे, फुफेरे और मौसेर भाई-बहिनों के लिए किया जाता है। इसी प्रकार 'अंकल' (Uncle) शब्द का प्रयोग भी पिता के भाई, मामा, फूफा, मौसा आदि सम्बन्धियों के लिए किया जाता है। डॉ रिवर्स ने सम्बन्ध सूचक संज्ञाओं की एक तीसरी पद्धति का उल्लेख भी किया है जिसका प्रयोग जैविक परिवार के सदस्य आपस में करते हैं।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

1. .... पहला विद्वान था जिसने नातेदारी शब्दावलियों के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योग दिया।
2. हमारा अर्थ एक .... से ही है जो समाज में पिता के संबंध से जाना जाता है।
3. .... शब्द बुआ और सास के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

कुछ अन्य व्याख्याएँ भी उपलब्ध हैं। ऐसा सुझाया गया है कि वर्गात्मक संज्ञाएँ कुछ विशेष स्वजनों के बीच कल्पित समानताबोध पर आधारित हो सकती हैं। कोबर एवं कुछ अन्य लेखकों ने इसकी तथाकथित मात्र नामवादी व्याख्या की है। इसका अभिप्राय यह है कि इन शब्दों द्वारा एक व्यक्ति को मात्र नाम दिया जाता है, तथा स्वजन-सूचक शब्द परिचय के उपकरण मात्र होते हैं, अत: इनसे कोई गंभीर अर्थ नहीं निकाला जा सकता। यह बात भी सही हो सकती है कि एक भाषा जितनी कम या अधिक विकसित होगी, अर्थात् जितना सीमित या विस्तृत इसका शब्द-भंडार होगा, उतनी ही कम या अधिक वर्गात्मक संज्ञाएँ इसमें होंगी।

स्वजन अध्ययनों के क्षेत्र में विषय के वैज्ञानिक प्रतिपादन द्वारा रेडक्लिफ-ब्राउन ने काफी वैचारिक स्पष्टता ला दी है। उन्होंने, मोर्गन से भिन्न, बिना किसी उद्‌विकासीय पूर्वग्रह के स्वजन पद्धतियों का अध्ययन किया। स्वजन-प्रथा की उत्पत्ति की खोज के हर अटकलबाजीपूर्ण प्रयासों का खंडन करते हुए उन्होंने प्रकार्यवादी आधार पर सूक्ष्मदर्शी रूप में इसका अध्ययन किया। इस तरह के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य समाज की क्रियाशीलता की संपूर्णता को किसी काल अथवा सर्वकालीन संदर्भ में समझना है। इसीलिए विवाह और स्वजन-पद्धति की परिभाषा रेडक्लिफ-ब्राउन ने एक ऐसी व्यवस्था के अर्थ में दी है जो व्यक्तियों को साथ-साथ रहने एवं एक व्यवस्थित सामाजिक जीवन के रूप में एक-दूसरे के साथ सहयोग करने में सक्षम बनाती है। प्रचलित स्वजन-सूचक शब्दों के अध्ययन को उन्होंने स्वजन-पद्धति के अध्ययन का प्रथम चरण माना है।

रेडक्लिफ-ब्राउन ने कतिपय साधारणीकरणों की रचना भी की है। इन्हें उन्होंने स्वजन-संरचना के सिद्धांत कहा है। ये सिद्धांत हैं: निकटवर्ती पीढ़ियों की असमानता का सिद्धांत, सहोदर समूह की एकता का सिद्धांत, आदि। इसे दूसरे सिद्धांत के अनुसार, सिब नामक समूह की एकात्मकता इसके किसी भी सदस्य (श्री) द्वारा अपनी आयु समूह के सभी सिब सदस्यों को अपने सहोदरवत मानने तथा उनके लिए सहोदर-अर्थी संबोधन प्रयुक्त करने द्वारा व्यक्त होती है। इससे एक छितरा-बिखरा समूह भी पूर्णसंगठित इकाई का रूप ग्रहण कर लेता है। एक अनपलट (अप्रत्यावर्ती) नियम की तरह बहिर्विवाह इसका तर्कसंगत परिणाम होता है। प्रथम सिद्धांत के संदर्भ में, जब एक पीढ़ी अपने से तत्काल बाद वाली पीढ़ी के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार होती है, तथा वरिष्ठ पीढ़ी की सत्ता बनाए रखना आवश्यक होता है, तब इन्हीं तथ्यों से निकटवर्ती पीढ़ियों की असमानता का सिद्धांत अभिव्यक्त होता है।

नोट्स मोर्गन ने विश्व में प्रचलित नातेदारी शब्दों का अध्ययन करके उन्हें मुख्य रूप से दो भागों में बांटा है–वर्गात्मक सम्बन्ध सूचक संज्ञाएँ (Classificatory terminology), एवं व्यक्तिकात्मक या वर्णनात्मक या विशिष्टात्मक सम्बन्ध सूचक संज्ञाएँ (Descriptive Terminology)।

8.2 सारांश (Summary)

- नातेदारी शब्दावली ऐसी संज्ञाएँ होती हैं जिनका प्रयोग विभिन्न प्रकार के नाते-रिश्तेदारों के संबंधों का उल्लेख करने के लिए किया जाता है।
- मोर्गन ने इसे दो भागों में विभाजित किया है–1. व्यक्तिकात्मक 2. वर्गात्मक नातेदारी शब्दावली।
- जब अनेक संबंधियों को एक ही वर्ग अथवा श्रेणी में वर्गीकृत कर उन्हें एक ही संज्ञा से संबोधित किया जाता है तो ये वर्गात्मक नातेदारी शब्दावली है। उरांव में 'टाची' शब्द पिता की बहन, माँ के भाई की पत्नी, और सास के लिए प्रयुक्त होता है।

8.3 शब्दकोश (Keywords)

1. **व्यक्तिकात्मक नातेदारी शब्दावली (Descriptive Kinship terms)**–प्रत्येक संबंधी के लिए एक विशिष्ट संज्ञा का प्रयोग।
2. **संबोधन नातेदारी शब्दावली (Kinship terms of address)**–एक व्यक्ति द्वारा अपने किसी संबंधी को पुकारने या संबोधन करने के लिए एक विशिष्ट संज्ञा का प्रयोग जैसे मम्मी, पापा, डैडी, बाबा आदि।

8.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. स्वजन-सूचक शब्द या नातेदारी शब्द का क्या अर्थ है?
2. मोर्गन ने नातेदारी शब्दों को कितने भागों में बाँटा है?

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. मोर्गन 2. विशिष्ट सम्बन्धी 3. आमी।

8.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. सामाजिक मानवशास्त्र–मजुमदार एवं मदान।
2. भारत में समाज–विरेन्द्रा प्रकाश शर्मा, डी. के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीबूटर्स।